जैनधर्म के अनुसार दीपावली पूजन विधि

आशीर्वाद

प.पू. मुनि पुंगव श्री १०८ सुधासागर जी महाराज
पू. क्षुल्लक श्री १०५ गंभीरसागर जी महाराज
पू. क्षुल्लक श्री १०५ धैर्यसागर जी महाराज

प्रकाशक
आचार्य ज्ञानसागर ग्रन्थमाला
श्री दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान
वीरोदय नगर, जैन नशियां रोड,
सांगानेर, जयपुर (राज.)
फोन नं. ०१४१-२७३०५५२, ३९४१२२२

मूल्य : २.०० रुपये

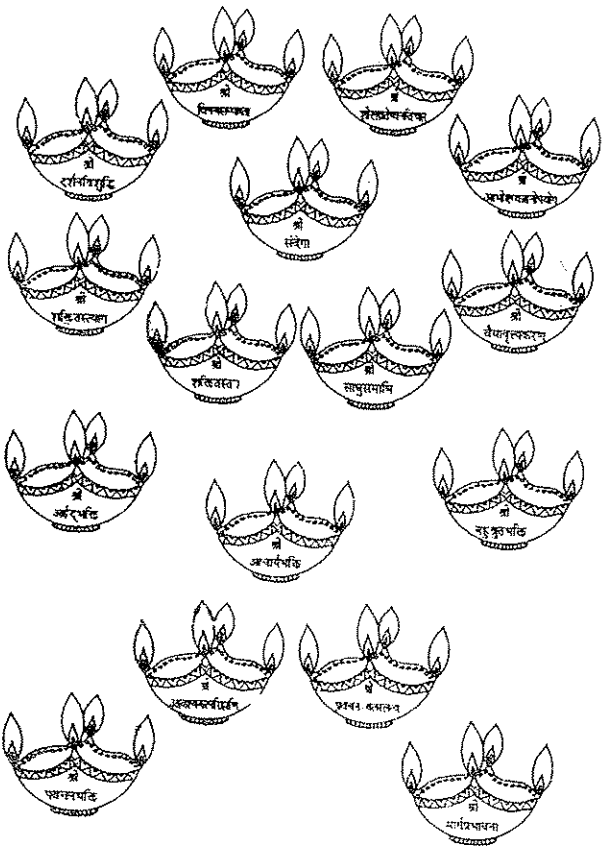

दीपावली

अनादि काल से भरतक्षेत्र में अनंत चौबीसी होती आयी हैं, इसी क्रम में इस युग में भी ऋषभनाथ से लेकर महावीर पर्यन्त चौबीस तीर्थंकर हुए। तेईसवें तीर्थङ्कर पार्श्वनाथ के 256 वर्ष साढ़े तीन माह के बाद अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीर को कार्तिक वदी अमावस्या को मोक्ष प्राप्त हुआ था तथा उनके प्रथम गणधर इन्द्रभूति गौतम को अपराह्निक काल में उसी दिन कैवल्य की प्राप्ति हुई थी इसी के प्रतीक रूप में कार्तिक वदी अमावस्या को दीपावली पर्व मनाया जाता है।

प्रातःकाल पूजाविधि (मंदिर में) :- प्रातःकाल सूर्योदय के समय स्नानादि करके पवित्र वस्त्र पहनकर जिनेन्द्र देव के मन्दिर जी में परिवार के साथ पहुँच कर जिनेन्द्र देव की वन्दना करनी चाहिए तदुपरान्त थाली में अथवा मूलनायक भगवान् की वेदी पर चार-चार बाती वाले सोलह दीपक प्रज्ज्वलित करना चाहिए तथा भगवान् महावीर स्वामी की पूजन, निर्वाणकाण्ड पढ़ने के पश्चात् महावीरस्वामी के मोक्षकल्याणक का अर्घ्य बोलकर निर्वाण लाडू चढ़ाना चाहिए।

निर्वाण लाडू चढ़ाने वाले दिन सायं को श्रावकगण अपने-अपने घरों में दीपावली पूजन करते हैं। दीपकों का मनोहर प्रकाश करते हैं। श्री जिनमंदिर जी में व अपनी दुकानें पर दीपकों को सजाते हैं और प्रमुदित होते हैं।

संध्या काल में पूजा विधि (घर में) :- अपराह्नकाल गौधूली बेला (सायं 4 से 7 बजे तक) में घर के ईशान कोण (उत्तर-पूर्व में) अथवा घर के मुख्य कमरे में पूर्व की दीवार अथवा सुविधानुसार दीवार पर माण्डना (श्री का पर्वताकार लेखन) बनाकर चौकी के ऊपर जिनवाणी एवं भगवान् महावीर स्वामी की तस्वीर रखनी चाहिए। अन्य देवी-देवताओं (यथा सरस्वती, लक्ष्मी, गणेशजी आदि) के चित्रादि नहीं रखना चाहिए क्योंकि जैनधर्म में इसका कोई उल्लेख नहीं है। घर के मुखिया अथवा किसी अन्य सदस्य को एवं सभी सदस्यों को शुद्ध धोती-दुपट्टा पहनकर दीपमालिका के बायीं तरफ आसन लगाकर बैठना चाहिए सोलहकारण भावना के प्रतीक रूप चौकी पर सोलह दीपक प्रज्ज्वलित करना चाहिये। इन्हीं सोलहकारण भावनाओं को भाकर तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध भगवान् महावीरस्वामी ने किया था इसी के प्रतीक स्वरूप सोलह दीपक चार-चार बातियों वाले जलाए जाते हैं। ($16 \times 4 = 64$) यह 64 का अंक चौसठ ऋद्धि का प्रतीक है। भगवान् महावीर चौसठ ऋद्धियों से युक्त थे। अतः सोलह दीपक चौसठ

बत्तियों से जलाकर दीपकों में शुद्ध देशी घी उपयुक्त होता है। (घृत की अनुपलब्धि पर यथायोग्य शुद्ध तेल का प्रयोग किया जा सकता है।) दीपकों पर सोलह भावना अंकित करनी चाहिए। इन्हें जलाने के पश्चात् दीपावली पूजन, सरस्वती (जिनवाणी) पूजन, चौसठ ऋद्धि का अर्घ्य, धुली हुई अष्ट द्रव्य से चढ़ाना चाहिए। पूजन से पूर्व तिलक एवं मौली बन्धन सभी को करना चाहिए।

दुकान पर पूजन :- इसी प्रकार दुकान पर भी पूजन करनी चाहिए अथवा लघुरूप में पंचपरमेष्ठी के प्रतीक रूप पाँच दीपक प्रज्ज्वलित कर पूजन करनी चाहिए। पूजन करने से पूर्व अष्ट द्रव्य तैयार कर एक चौकी पर रख लें। दूसरी चौकी पर थाली में स्वस्तिक बनायें, मंगलकलश की स्थापना करें। गद्दी पर बहीखाता, कलम-दवात, रुपयों की थैली आदि रखें।

एक चौकी पर नए बही के अंदर सीधे पृष्ठ पर ऊपर हल्दी या रोली से स्वस्तिक बनायें तथा श्री का पर्वताकार लेखन करें।

जैन समाज में भी इस दिन बही खाते बदलने की और नया कार्य प्रारम्भ करने की परम्परा चली आ रही है क्योंकि वह युग परिवर्तन का समय था इसलिए नई व्यवस्था के प्रारम्भ के योग्य यह समय माना गया।

पूजन विसर्जन :- शांति पाठ एवं विसर्जन करके घर का एक व्यक्ति अथवा बारी-बारी सभी व्यक्ति मुख्य दीपक को अखण्ड प्रज्ज्वलित करते हुए रात भर णमोकार मंत्र जाप अथवा पाठ या भक्तामर स्तोत्र आदि पाठ करते हुए शक्ति अनुसार रात्रि जागरण करना चाहिए यदि रात्रि जागरण नहीं कर सके तो कम से कम मुख्य दीपक में यथायोग्य घृत भरकर उसे जाली से ढक कर उसी स्थान पर रात भर जलने देना चाहिए। शेष दीपकों में से एक दीपक मन्दिर में भेज देना चाहिए यदि निकट में कोई सम्बन्धी रहते हैं तो वहाँ भी दीपक भेजा जा सकता है। अथवा शेष दीपकों को घर के मुख्य दरवाजे पर एवं मुख्य-मुख्य स्थानों पर रखे जा सकते हैं। मिष्ठान आदि का वितरण करना है तो पूजा समाप्ति के पश्चात् पूजनस्थल से थोड़ा दूर हटकर वितरित करें ।

पूजा के पश्चात् निर्माल्य सामग्री पशु-पक्षियों को अथवा मन्दिर के माली को दी जा सकती है।

चौबीस पत्तों की आम या आशापाल की बन्दनवार बनाकर दरवाजे के बाहर बांधनी चाहिए जो चौबीस तीर्थंकरों की प्रतीक है।

(समुच्चय मंत्र-ओं ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यो नमः)

नोट :- दीपावली के दिन पटाखे, अनार बिलकुल न जलावें। इससे लाखों जीवों का घात होता है। पर्यावरण दूषित होता है। स्वयं को भी हानि हो जाती है और भारी पाप का बन्ध होता है। अत: अपने बच्चों को इस बुरी आदत से रोकें।

सामग्री :- अष्ट द्रव्य की थाली, दीपक, मंगल कलश, सरसों, श्रीफल, अगरबत्ती, जिनवाणी, 2 चौकी, 2 पाटे, रोली, केशर घिसी हुई, कलम-दवात, फूलमाला, नई बही।

विधि :- सायंकाल को उत्तम गौधूली बेला में अपने मकान या दुकान के पवित्र स्थान में पूर्व या उत्तर की तरफ मुंह करके पूजा प्रारंभ करें।

एक पाटे पर चावल से स्वस्तिक बनाकर उस पर महावीर स्वामी का मनोहर फोटो, जिनवाणी, दाहिनी तरफ घी का दीपक, बाईं तरफ धूपदान, मध्य में मंगलकलश स्थापित करें।

एक पाटे पर अष्ट द्रव्य की थाली, दूसरे पाटे पर द्रव्य चढ़ाने के लिए खाली थाली में स्वस्तिक बनाएं।

पूजा गृहस्थाचार्य या कुटुम्ब के मुखिया को स्नान कर धोती दुपट्टा पहनकर करना चाहिए।

मुखिया के अभाव में घर के विशेष व्यक्ति को स्नान कर शुद्ध धोती-दुपट्टा पहनना चाहिए।

पूजन में बैठे हुए सभी सज्जनों का निम्न मंत्र बोलकर तिलक करें-

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमोगणी।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैन धर्मोऽस्तु मंगलं॥

इसके बाद निम्न मंत्र पढ़कर सभी जनों को शुद्धि के लिए थोड़े से जल के हल्के छींटे दें-

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतं वर्षणे, अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठः ठः ह्रीं स्वाहा।

दीपक प्रज्ज्वलित करते हुए निम्न मंत्र उच्चारें-

ॐ ह्रीं अज्ञान तिमिरहरं दीपकं प्रज्ज्वलामि करोमि स्वाहा

श्री महावीर स्वामिने नमः

卐

श्रीलाभ श्री श्री शुभ

श्री श्री

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री

श्री ऋषभाय नमः। श्री महावीर स्वामिने नमः। श्री गौतम गणधराय नमः

श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै नमः।

श्री केवलज्ञान लक्ष्मीदेव्यै नमः।

नगर मध्य .....शुभ मिति.....वार.....सं.....वीर निर्वाण सं..... ता..... माह.....सन्.....लग्न.....नक्षत्र.....

शुभ बेला में नवीन मुहूर्त किया।

नाम दुकान ..... । नाम बही .....।

पूजा प्रारंभ

ॐ जय जय जय! नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादि मूल-मन्त्रेभ्यो नमः (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,

साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,

साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि,

सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,

केवलि-पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि॥

ॐ नमो अर्हंते स्वाहा (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

श्री देव शास्त्र गुरु

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूं।
वर धूप निर्मल फल विविध बहु, जन्म के पातक हरूं॥
इह भांति अर्घ चढ़ाय नित, भवि करत शिव पंकति मचूं।
अरहन्त श्रुत सिद्धान्त गुरु, निर्ग्रंथ नित पूजा रचूं॥
वसुविधि अर्घ संजोय कै, अति उछाह मनकीन।
जासो पूजों परम पद देव शास्त्र गुरु तीन।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

विद्यमान बीस तीर्थंकर

जल फल आठों द्रव्य अरघ कर प्रीतिधरी है।
गणधर इन्द्र निहूंतैं, थुति पूरी न करी है॥
द्यानत सेवक जानके, (हो) जगतैं लेहु निकार॥
सीमन्धर जिन आदि दे, स्वामी बीस विदेह मँझार।।
श्री जिनराज हो, भवतारण तरण जिहाज ॥

ॐ ह्रीं विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर स्वामी

जल फल वसु सजि हिम थार, तन मन मोद धरों।
गुण गाऊं भवदधि तार, पूजत पाप हरों।
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर, सन्मति दायक हो।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस्वती (जिनवाणी)

जल चंदन अक्षत फूल चरु अरु, दीप धूप अति फल लावै।
पूजा को ठानत, जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुख पावै॥
तीर्थंकर की ध्वनि गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञान मई।
सो जिनवर वानी शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यैअनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गौतम स्वामी

गौतमादिक सर्वे एक दश गणधरा, बर जिनके मुनि सहस चौदहवरा।

नीर गंधाक्षतं पुष्प चरु दीपकं, धूप फल अर्घ ले हम जजे महर्षिकं॥

ॐ ह्रीं महावीर जिनस्य गौतमाद्येकादश गणधर चर्तुदश सहस्त्रमुनिवरेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

इसके बाद शांति पाठ पढ़े विसर्जन करें। परिवार के सभी जनों को तिलक लगायें। अन्न रहित मिष्ठान से सत्कार करें।

श्री गौतम गणधर (गणपति) पूजन

जय जय इन्द्रभूति गौतम गणधर स्वामी मुनिवर जय जय।
तीर्थङ्कर श्री महावीर के प्रथम मुख्य गणधर जय जय॥
द्वादशाङ्ग श्रुत पूर्ण ज्ञानधारी गौतम स्वामी जय जय।
वीर प्रभु की दिव्यध्वनि जिनवाणी को सुन हुए अभय॥
ऋद्धि सिद्धि मङ्गल के दाता मोक्ष प्रदाता गणधर देव।
मङ्गलमय शिव पथ पर चलकर मैं श्री सिद्ध बनूँ स्वयमेव॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिन् ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिन् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।

ॐ ह्रींश्रीगौतमगणधरस्वामिन् !अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

मैं मिथ्यात्व नष्ट करने को निर्मल जल की धार करूँ।
सम्यग्दर्शन पाऊँ जन्म-मरण क्षय कर भव रोग हरूँ॥
गौतम गणधर स्वामी के चरणों की मैं करता पूजन।
देव आपके द्वारा भाषित जिनवाणी को करूँ नमन॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलम् नि. स्वाहा।।

पञ्च पाप अविरति को त्यागूँ शीतल चन्दन चरण धरूँ।
भव आताप नाश करके प्रभु मैं अनादि भव रोग हरूँ।।गौ. ॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने संसारतापविनाशनाय चन्दनम् नि. स्वाहा।।

पञ्च प्रमाद नष्ट करने को उज्ज्वल अक्षत भेंट करूँ।
अक्षय पद की प्राप्ति हेतु प्रभु मैं अनादि भव रोग हरूँ।।गौ. ॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि. स्वाहा।।

चार कषाय अभाव हेतु मैं पुष्प मनोरम भेंट करूँ।
कामबाण विध्वंस करूँ प्रभु मैं अनादि भव रोग हरूँ।।गौ. ॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पम् नि. स्वाहा।।

मन वच काया योग सर्व हरने को प्रभु नैवेद्य धरूँ।

क्षुधा व्याधि का नाम मिटाऊँ मैं अनादि भव रोग हरूँ।गौ. ॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् नि. स्वाहा।।

सम्यग्ज्ञान प्राप्त करने को अन्तर दीप प्रकाश करूँ।
चिर अज्ञान तिमिर को नाशूँ मैं अनादि भव रोग हरूँ।गौ. ॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् नि. स्वाहा।

मैं सम्यक् चारित्र ग्रहण कर अन्तर तप की धूप वरूँ।
अष्ट कर्म विध्वंस करूँ प्रभु मैं अनादि भव रोग हरूँ।गौ. ॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने अष्टकर्मविनाशनाय धूपम् नि. स्वाहा।

रत्नत्रय का परम मोक्ष फल पाने को फल भेंट करूँ।
शुद्ध स्वपद निर्वाण प्राप्त कर मैं अनादि भव रोग हरूँ।गौ. ॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने मोक्षफलप्राप्तये फलम् नि. स्वाहा।

जल फलादि वसु द्रव्य अर्घ्य चरणों में सविनय भेंट करूँ।
पद अनर्घ्य सिद्धत्व प्राप्त कर मैं अनादि भव रोग हरूँ।गौ. ॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् नि. स्वाहा।

श्रावण कृष्ण एकम् के दिन समवशरण में तुम आए।
मानस्तम्भ देखते ही तो मान मोह अघ गल पाए॥
महावीर के दर्शन करते ही मिथ्यात्व हुआ चकचूर।
रत्नत्रय पाते ही दिव्यध्वनि का लाभ लिया भरपूर॥

ॐ ह्रीं श्री दिव्यध्वनिप्राप्ताय गौतमगणधरस्वामिने अर्घ्यम् नि. स्वाहा।

कार्तिक कृष्ण अमावस्या को कर्म घातिया करके क्षय।
सायंकाल समय में पाई केवलज्ञान लक्ष्मी जय॥
ज्ञानावरण दर्शनावरण मोहनीय का करके अन्त।
अन्तराय का सर्वनाश कर तुमने पाया पद भगवन्त॥

ॐ ह्रीं श्री केवलज्ञानप्राप्ताय गौतमगणधरस्वामिने अर्घ्यम् नि. स्वाहा।

विचरण करके दुखी जगत के जीवों का कल्याण किया।
अन्तिम शुक्ल ध्यान के द्वारा योगों का अवसान किया॥
देव बानवे वर्ष अवस्था में तुमने निर्वाण लिया।
क्षेत्र गुणावा करके पावन सिद्ध स्वरूप महान लिया॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षपदप्राप्ताय गौतमगणधरस्वामिने अर्घ्यम् नि. स्वाहा।

जयमाला

मगध देश के गौतमपुर वासी वसुभूति ब्राह्मण पुत्र।
माँ पृथ्वी के लाल लाड़ले इन्द्रभूति तुम ज्येष्ठ सुपुत्र॥
अग्निभूति अरु वायुभूति लघु भ्राता द्वय उत्तम विद्वान्।
शिष्य पाँच सौ साथ आपके चौदह विद्या ज्ञान निधान॥
शुभ वैसाख शुक्ल दशमी को हुआ वीर को केवलज्ञान।
समवशरण की रचना करके हुआ इन्द्र को हर्ष महान॥
बारह सभा बनी अति सुन्दर गन्धकुटी के बीच प्रधान।
अन्तरिक्ष में महावीर प्रभु बैठे पद्मासन निज ध्यान॥
छयासठ दिन हो गए दिव्यध्वनि खिरी नहीं प्रभु की यह ज्ञान।
अवधिज्ञान से लखा इन्द्र ने "गणधर की है कमी प्रधान"॥
इन्द्रभूति गौतम पहले गणधर होंगे यह जान लिया।
वृद्ध ब्राह्मण वेश बना, गौतम के गृह प्रस्थान किया॥
पहुँच इन्द्र ने नमस्कार कर किया निवेदन विनयमयी।
मेरे गुरु श्लोक सुनाकर, मौन हो गए ज्ञानमयी॥
अर्थ, भाव वे बता न पाए वही जानने आया हूँ।।
आप श्रेष्ठ विद्वान् जगत में शरण आपकी आया हूँ।
इन्द्रभूति गौतम श्लोक श्रवण कर मन में चकराए।
झूठा अर्थ बताने के भी भाव नहीं उर में आए॥
मन में सोचा तीन काल, छः द्रव्य, जीव, षट् लेश्या क्या ?
नव पदार्थ, पंचास्तिकाय, गति, समिति, ज्ञान, व्रत, चारित क्या ?
बोले गुरु के पास चलो मैं वहीं अर्थ बतलाऊँगा।
अगर हुआ तो शास्त्रार्थ कर उन पर भी जय पाऊँगा॥
अति हर्षित हो इन्द्र हृदय में बोला स्वामी अभी चलें।
शंकाओं का समाधान कर मेरे मन की शल्य दलें॥
अग्निभूति अरु वायुभूति दोनों भ्राता संग लिए जभी।
शिष्य पाँच सौ संग ले गौतम साभिमान चल दिए तभी॥
समवशरण की सीमा में जाते ही हुआ गलित अभिमान।
प्रभु दर्शन करते ही पाया सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान।।
तत्क्षण सम्यक्चारित धारा मुनि बन गणधर पद पाया।

अष्ट ऋद्धियां प्रगट हो गई ज्ञान मन:पर्यय छाया॥
खिरने लगी दिव्यध्वनि प्रभु की परम हर्ष उर में आया।
कर्म नाशकर मोक्ष प्राप्ति का यह अपूर्व अवसर पाया॥
ओंकार ध्वनि मेघ गर्जना सम होती है गुणशाली।
द्वादशांग वाणी तुमने अन्तर्मुहूर्त में रच डाली।।
दोनों भ्राता शिष्य पाँच सौ ने मिथ्यात्व तभी हरकर।
हर्षित हो जिन दीक्षा ले ली दोनों भ्रात हुए गणधर॥
राजगृही के विपुलाचल पर प्रथम देशना मंगलमय।
महावीर सन्देश विश्व ने सुना शाश्वत शिव सुखमय॥
इन्द्रभूति, श्री अग्निभूति, श्री वायुभूति, शुचिदत्त, महान्।
श्री सुधर्म, मांडव्य, मौर्यसुत, श्री अकम्य, अति ही विद्वान्॥
अचल और मेदार्य प्रभास यही ग्यारह गणधर गुणवान्।
महावीर के प्रथम शिष्य तुम हुए मुख्य गणधर भगवान्॥
छह-छह घड़ी दिव्यध्वनि खिरती चार समय नित मंगलमय।
वस्तुतत्त्व उपदेश प्राप्त कर भव्य जीव होते निजमय॥
तीस वर्ष रह समवशरण में गूँथा श्री जिनवाणी को।
देश-देश में कर विहार फैलाया श्री जिनवाणी को॥
कार्तिक कृष्ण अमावस प्रात: महावीर निर्वाण हुआ।
सन्ध्याकाल तुम्हें भी पावापुर में केवलज्ञान हुआ॥
ज्ञान लक्ष्मी तुमने पाई और वीर प्रभु ने निर्वाण।
दीप-मालिका पर्व विश्व में तभी हुआ प्रारम्भ महान॥
आयु पूर्ण जब हुई आपकी योग नाश निर्वाण लिया।
धन्य हो गया क्षेत्र गुणावा देवों ने जयगान किया॥
आज तुम्हारे चरण कमल के दर्शन पाकर हर्षाया।
रोम-रोम पुलकित है मेरे भव का अन्त निकट आया॥
मुझको भी प्रज्ञा छैनी दो मैं निज पर में भेद करूँ।
भेदज्ञान की महाशक्ति से दुखदायी भव खेद हरूँ॥
पद सिद्धत्व प्राप्त करके मैं पास तुम्हारे आ जाऊँ।
तुम समान बन शिव पद पाकर सदा-सदा को मुस्काऊँ॥
जय जय गौतम गणधर स्वामी अभिरामी अन्तरयामी।

पाप-पुण्य पर भाव विनाशी मुक्ति निवासी सुखधामी ॥
ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घ्यं नि. स्वाहा।
गौतम स्वामी के वचन भाव सहित उर धार।
मन, वच, तन जो पूजते वे होते भव पार॥
(इत्याशीर्वादः)

श्रीमहावीराष्टकस्तोत्रम्

(शिखरिणी छन्दः)

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः,
समं भान्ति ध्रौव्य-व्यय-जनि लसन्तोऽन्तरहिताः।
जगत्साक्षी मार्ग-प्रकटन-परो भानुरिव यो,
महावीर स्वामी नयनपथगामी भवतु मे (नः)॥ १॥
अताम्रं यच्चक्षुः कमलयुगलं स्पन्द-रहितं,
जनान् कोपापायं प्रकटयति वाभ्यन्तरमपि।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला,
महावीर स्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥ २॥
नमन्नाकेन्द्राली मुकुटमणि-भा-जाल-जटिलं,
लसत्पादाम्भोज-द्वयमिह यदीयं तनुभृताम्।
भवज्वाला-शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥ ३॥
यदर्चा भावेन प्रमुदितमना दर्दुर इह,
क्षणादासीत्स्वर्गी गुण-गणसमृद्धः सुखनिधिः।
लभन्ते सद्भक्ताः शिवसुखसमाजं किमु तदा,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥ ४॥
कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगततनुर्ज्ञान-निवहो,
विचित्रात्माप्येको नृपतिवरसिद्धार्थतनयः।
अजन्मापि श्रीमान् विगतभवरागोऽद्भुत-गतिः,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥ ५॥
यदीया वाग्गङ्गा विविधनयकल्लोलविमला,
बृहज्ज्ञानाम्भोभिर्जगति जनतां या स्नपयति।
इदानीमप्येषा बुधजनमरालैः परिचिता,

महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ६ ॥
अनिर्वारोद्रेकस् -त्रिभुवनजयी काम-सुभटः,
कुमारावस्थायामपि निजबलाद्येन-विजितः।
स्फुरन् नित्यानन्द-प्रशम-पद राज्याय स जिनः,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ७ ॥
महामोहातङ्क-प्रशमनपरा-कस्मिकभिषग्,
निरापेक्षो बन्धु-विंदित-महिमा मङ्गलकरः।
शरण्यः साधूनां भवभयभृतामुत्तमगुणो,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥ ८ ॥
महावीराष्टकं स्तोत्रं, भक्त्या 'भागेन्दुना' कृतम्।
यः पठेच्छृणुयाच्चापि, स याति परमां गतिम् ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीमहावीराष्टकस्तोत्रम् ॥

निर्वाण काण्ड (भाषा)

वीतराग वन्दौं सदा, भाव सहित सिरनाय।
कहूँ काण्ड निर्वाण की, भाषा सुगम बनाय ॥1 ॥
अष्टापद आदीश्वर स्वामि, वासुपूज्य चम्पापुरि नामि।
नेमिनाथ स्वामी गिरनार, वन्दो भाव-भगति उर धार ॥2 ॥
चरम तीर्थंकर चरम-शरीर, पावापुरि स्वामी महावीर।
शिखरसमेद जिनेसुर बीस, भावसहित वन्दौं निश-दीस ॥3 ॥
वरदत्तराय रु इन्द मुनिन्द, सायरदत्त आदि गुणवृन्द।
नगर तारवर मुनि उठकोडि, वन्दौं भावसहित कर जोड़ि ॥4 ॥
श्रीगिरनार शिखर विख्यात, कोडि बहत्तर अरु सौ सात।
सम्बु प्रद्युम्न कुमर द्वैभाय, अनिरुद्ध आदि नमूं तसु पाय ॥5 ॥
रामचन्द्र के सुत द्वै वीर, लाडनरिन्द आदि गुणधीर।
पाँच कोडि मुनि मुक्ति मँझार, पावागिरी वन्दौं निरधार ॥6 ॥
पाण्डव तीन द्रविड-राजान, आठ कोडि मुनि मुकति पयान।
श्री शत्रुंजयगिरि के सीस, भावसहित वन्दौं निश-दीस ॥7 ॥
जे बलभद्र मुकति में गये, आठ कोडि मुनि औरहु भये।
श्रीगजपन्थ शिखर सुविशाल, तिनके चरण नमूँ तिहूँ काल ॥8 ॥
राम हनू सुग्रीव सुडील, गवय गवाक्ष नील महानील।

कोडि निन्यानवै मुक्तिपयान, तुंगीगिरिवन्दौं धरि ध्यान ॥9 ॥
नंग अनंग कुमार सुजान, पाँच कोडि अरु अर्ध प्रमान।
मुक्ति गये सोनागिरि शीश, ते वन्दौं त्रिभुवनपति ईस ॥10 ॥
रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गये रेवा-तट सार।
कोटि पंच अरु लाख पचास, ते वन्दौं धरि परम हुलास ॥11 ॥
रेवानदी सिद्धवर कूट, पश्चिम दिशा देह जहँ छूट।
द्वै चक्री दश कामकुमार, ऊठकोडि वन्दौं भव पार ॥12 ॥
बडवानी बडनयन सुचंग, दक्षिण दिशि गिरि चूल उतंग।
इन्द्रजीत अरु कुम्भ जु कर्ण, ते वन्दौं भव-सागर-तर्ण ॥13 ॥
सुवरण भद्र आदि मुनि चार, पावागिरि-वर शिखर-मँझार।
चेलना नदी-तीर के पास, मुक्ति गये वन्दौं नित तास ॥14 ॥
फलहोड़ी बड़गाम अनूप, पच्छिम दिशा द्रोणगिरि रूप।
गुरुदत्तादि-मुनीसुर जहाँ, मुक्ति गये वन्दौ नित तहाँ ॥15 ॥
बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय।
श्रीअष्टापद मुक्ति मँझार, ते वन्दौं नित सुरत सँभार ॥16 ॥
अचलापुर की दिश ईसान, तहाँ मेढगिरि नाम प्रधान।
साढ़े तीन कोडि मुनिराय, तिनके चरण नमूँ चित लाय ॥17 ॥
वंसस्थल वन के ढिग होय, पश्चिम दिशा कुन्थुगिरि सोय।
कुलभूषणदिशभूषण नाम, तिनके चरणनि करुँ प्रणाम ॥18 ॥
जसरथ राजा के सुत कहे, देश कलिंग पाँच सौ लहे।
कोटिशिला मुनि कोटि प्रमान, वन्दन करुँ जोरि जुगपान ॥19 ॥
समवसरण श्रीपार्श्व-जिनन्द, रेसिन्दीगिरी नयनानन्द।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वन्दौं नित धरम-जिहाज ॥20 ॥
मथुरापुर पवित्र उद्यान, जम्बूस्वामी गय निर्वाण।
चरमकेवली पंचमकाल, ते वन्दौं नित दीनदयाल ॥21 ॥
तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वन्दन कीजै तहाँ।
मनवचकायसहितसिरनाय, वन्दन करहिं भविकगुणगाय ॥22 ॥
संवत सतरह सौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
'भैया' वन्दनकरहिंत्रिकाल, जयनिर्वाणकाण्डगुणमाल ॥23 ॥

॥ इति निर्वाणकाण्ड भाषा ॥

चौसठ ऋद्धि अर्घ्य (चौसठ अर्घ्य चढ़ावें)

ओं ह्रीं अवधिज्ञानबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं मनःपर्ययज्ञानबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं केवलज्ञानबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं बीजबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं कोष्ठज्ञानबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं पदानुसारिणीबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं संभिन्नश्रोतृत्वबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं दूरास्वादित्वबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं दूरस्पर्शत्वबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं दूरघ्राणत्वबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं दूर श्रवणत्वबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं दूर दर्शित्व बुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं दशपूर्वित्वबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं चतुर्दशपूर्वित्वबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं अष्टांगमहानिमित्तबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं प्रज्ञाश्रमणबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं प्रत्येकबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं वादित्वबुद्धिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं अणिमाविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं महिमाविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं लघिमाविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं गरिमाविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं प्राप्तिविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं प्रकाम्यविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं ईशत्वविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं वशित्वविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं अप्रतिघातविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं अंतर्धानविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं कामरूपविक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं नभस्तलगामित्वचारणक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं जलचारणक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ओं ह्रीं जंघाचारणक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं फलपुष्पपत्रचारणक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं अग्निधूमचारणक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं मेघधाराचारणक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं तंतुचारणक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं ज्योतिश्चारणक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं मरुच्चारणक्रियाऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं उग्रतपःऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं दीप्ततपःऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं तप्ततपःऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं महातपःऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं घोरतपःऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं घोरपराक्रमतपःऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं अघोरब्रह्मचारित्वतपःऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं मनोबलऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं वचनबलऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं कायबलऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं आमर्षौषधिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं क्ष्वेलौषधिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं जल्लौषधिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं मलौषधिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं विप्रुषौषधिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं सर्वौषधिऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं मुखनिर्विषऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं दृष्टिविषाविषऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं आशीविषऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं दृष्टिविषऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं क्षीरस्राविरसऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं मधुस्राविरसऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं अमृतस्राविरसऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं सर्पिस्राविरसऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं अक्षीणमहानसऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।
ओं ह्रीं अक्षीणमहालयऋद्धये नमः अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।